Peer Reviewed Book

Vinayak Books

संगीत मंथन

Sangeet Manthan

- डॉ. गौरव शुक्ल
- रुचिका शुक्ला

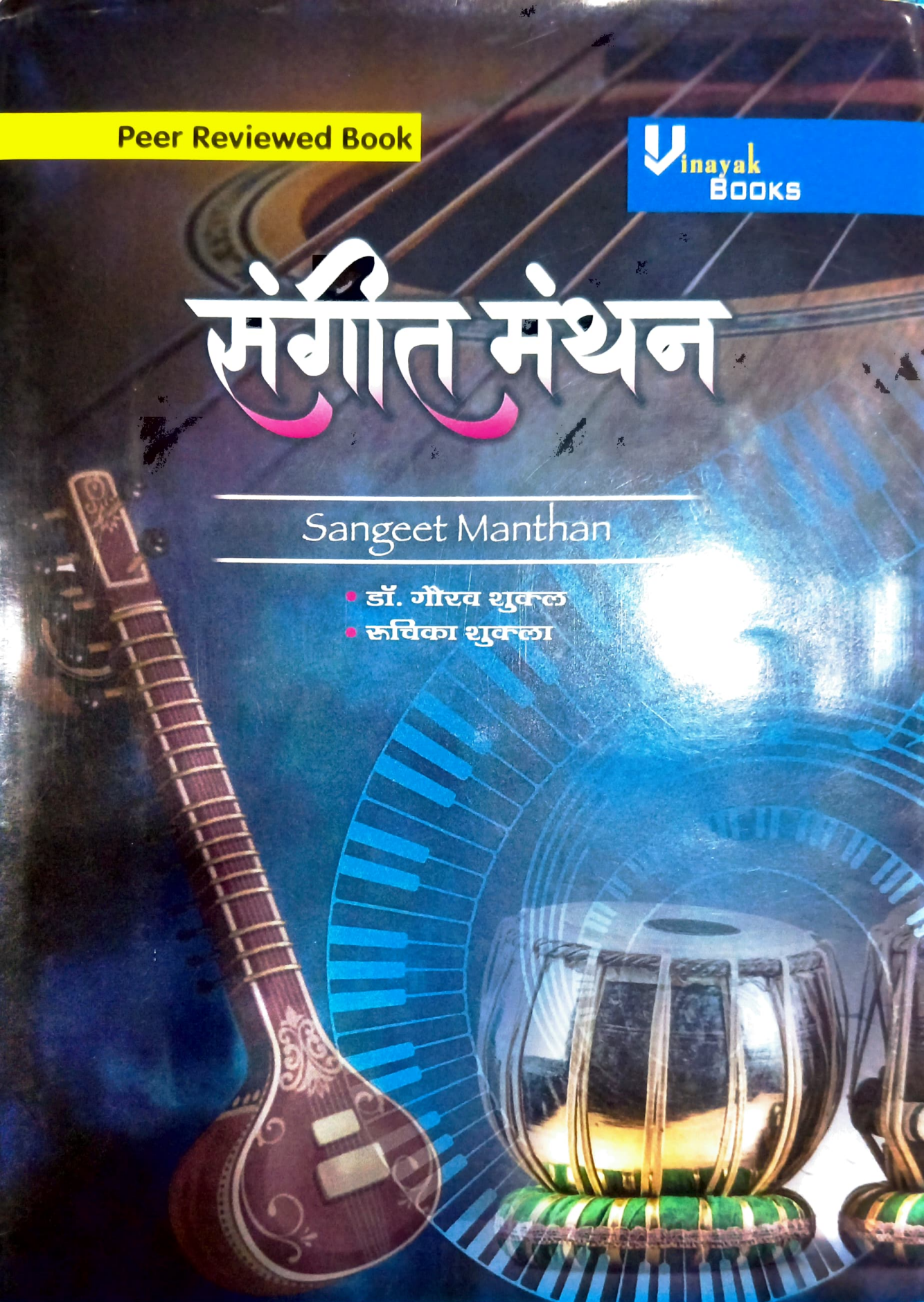

SHREE VINAYAK PUBLICATION, AGRA

प्रकाशक
श्री विनायक पब्लिकेशन
229, शास्त्रीपुरम, सिकन्दरा, आगरा-282007 (उ. प्र.)
मोबाइल : 9412458170, 9893635398
Email : info@vinayakpublishers.com
shreevinayakpublication2009@gmail.com

Visit us : www.vinayakpublishers.com

© सम्पादक

नवीनतम संस्करण

ISBN : 978-93-91267-46-9

Code : R0269

Price | P.B. : ₹ 499.00
H.B : ₹ 699.00

कम्प्यूटर टाईप सैटिंग एवं मुद्रक
श्री विनायक पब्लिशिंग यूनिट, आगरा

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system of transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying recording, or otherwise, without prior written permission of the publisher. Vinayak has obtained all the information in this book from the sources believed to bereliable and true. However, Vinayak or its editors or Author don't take any responsibility for the absolute accuracy on any information published and the damages or loss suffered thereupon. All disputes subject to Agra (UP) Jurisdiction only.

For Further information about the books published by vinayak kindly log on to www.vinayakpublishers.com
or email to shreevinayakpublication2009@gmail.com

दो शब्द

आप सभी को प्रणाम!

मेरे लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है कि "संगीत मंथन" नामक मेरी द्वितीय सम्पादकीय पुस्तक का प्रकाशन सफलता पूर्वक हो रहा है। इस पुस्तक में भारत वष के संगीत एवं चित्रकला विषय के कलाकार एवं कला शास्त्रियों द्वारा अपने विचार शोध पत्र के माध्यम से प्रेषित किये गये हैं जो कला एवं संगीत विषय के जिज्ञासुओं के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इस अवसर पर उन सभी लेखकों को धन्यवाद प्रेषित करना चाहता हूँ। आप सभी के विशेष सहयोग से पुस्तक अपनी पूर्णता को प्राप्त हो सकी है। "संगीत मंथन" पुस्तक का मुख्य उद्देश्य संगीत कला का संरक्षण एवं जन सामान्य तक संगीत के गुणों को पहुचाना है। पुस्तक की सह-सम्पादिका रूचिका जी को धन्यवाद जिनके विशेष सहयोग से पुस्तक को पूर्णता तक पहुँचाने सफल हो सका। साथ ही Peer Review Committe के सदस्यों को भी मैं धन्यवाद देता हूँ। जिन्होंने अपने अमूल्य समय में से पुस्तक में प्रकाशित शोध पत्रों का मूल्यांकन किया अन्त में मैं श्री राजीव त्यागी (श्री विनायक पब्लिकेशन आगरा का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होंने पुस्तक का प्रकाशन अत्यन्त प्रेम एवं सहयोग के साथ किया। आशा करता हूँ कि यह पुस्तक संगीत जिज्ञासुओं, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

धन्यवाद!
दिनांक : 19/08/2022
श्री कृष्ण जन्माष्टमी

डॉ गौरव शुक्ल
रूचिका शुक्ला
सम्पादक

List of Peer Review Committee

1. **डॉ. दुष्यन्त त्रिपाठी**
   विभागाध्यक्ष (संगीत विभाग)
   सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय
   ब्यावर, अजमेर (राजस्थान)

2. **प्रो. प्रभा भारद्वाज**
   आचार्य (संगीत विभाग)
   राजस्थान विश्वविद्यालय
   जयपुर (राजस्थान)

3. **प्रो. वर्षा अग्रवाल**
   प्राध्यापक (संगीत)
   शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र)

4. **राजीव त्यागी**
   प्रकाशक
   श्री विनायक पब्लिकेशन, आगरा (उ.प्र)

5. **ज्ञानेश चन्द्र पाण्डेय**
   सहायक आचार्य (गायन विभाग)
   संगीत एवं मंचकला संकाय, वाराणसी (उ.प्र)

6. **प्रो. रूचिमिता पाण्डे**
   आचार्य (सितार)
   संगीत विभाग, दयानन्द गर्ल्स पी.जी. कालेज, कानपुर (उ.प्र)

विषय-सूची

क्र. सं.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	हाड़ौती क्षेत्र की लोकगाथा–रुक्मणि का ब्यावला	7 — 9
2.	अभ्यास एवं साधना (आध्यात्मिक अध्ययन)	10 — 15
3.	हिन्दी फिल्म संगीत में उ. रहीस खाँ साहिब का योगदान	16 — 21
4.	धार्मिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित भारतीय नृत्य कला	22 — 25
5.	लोक संगीत	26 — 29
6.	ब्रह्मांण्ड के सुरीले नक्षत्र पंडित रविशंकर	30 — 32
7.	संगीत जगत में काजी नजरूल इस्लाम का योगदान-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	33 — 42
7.	फिल्मी गीतों में राजस्थानी लोक धुनों का प्रभाव	43 — 45
8.	डुग्गर भाषाई क्षेत्र में संस्कार गीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	46 — 51
10.	भारतीय संगीत में सांस्कृतिक तथा भाषाई वैविध्य	52 — 56
11.	भारतीय संगीत : पर्यटन एवं व्यावसायिक प्रबंधन	57 — 63
12.	संगीत : पारिस्थितिकी संतुलन एवं पर्यावरण संरक्षण में सहायक	64 — 70
13.	भारतीय संगीत एवं आध्यात्म	71 — 75
14.	नारी शक्ति एवं भारतीय संगीत	76 — 79
15.	शिक्षा में संगीत की आवश्यकता एवं महत्त्व	80 — 85
16.	जुगल शतक का सांगीतिक अवदान	86 — 90
17.	जम्मू क्षेत्र के लोक नृत्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	91 — 97
18.	भारतीय चित्रकला का विकास के अन्तर्गत हेतु प्रस्तुत काशी के काष्ठ शिल्प	98 — 111
19.	The Expressiveness of Elegant Music in Rational Advertisement	112 — 120
20.	Music and Musical Instruments Depicted in Indian Sculpture and Iconography	121 — 128

4

धार्मिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित भारतीय नृत्य कला

डॉ अपर्णा चाचोंदिया

सारांश–

भारत देश अपनी कला, संस्कृति एवं अध्यात्म के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। इस देश में विभिन्न धर्म, जाति एवं सम्प्रदाय के लोग साथ-साथ रहते हैं। भारत देश की कलाओं एवं संस्कृति में धार्मिक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भारत वर्ष कलाओं को सदैव श्रृद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। हमारे यहाँ कलाओं को मात्र मनोरंजन का साधन नहीं समझा जाता वरन इसे ईश्वर उपासना की वस्तु समझा जाता है। प्राचीन भारतीय कला-साधकों ने स्पष्ट रूप से कहा है–

विश्रान्तिर्यस्य सम्भोगे सा कला न कला मता।

लीयते परमानन्दे ययात्मा सा परा कला॥

अर्थात जिसका उद्देश्य भोग या मनोरंजन है वह कला नहीं है। वरन् जो परमानन्द में लीन कर दें वही कला सच्ची कला है।

मुख्य शब्द-कला, संस्कृति, धार्मिक

इस शोध पत्र के माध्यम से हम भारतीय नृत्य कलाओं की धार्मिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करने जा रहे है, जिसके लिए सर्वप्रथम हमें नृत्योत्पत्ति के विषय में जानना आवश्यक है। नृत्योत्पत्ति से संबंधित विभिन्न कथायें नृत्य जगत में प्रचलित है। नृत्य साहित्य में उपलब्ध कथाओं का अध्ययन करने पर एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि नृत्यकला की उत्पत्ति स्वर्गलोक में देवताओं के सहयोग एवं सानिध्य में हुई। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में नाट्योत्पत्ति की कथा बतलाई है हालांकि इसे नाट्योत्पत्ति की कथा कहा गया किं तु इस कथा में ही नाट्य में नृत्य की संयोजना के बारे में भी बताया गया है। नाट्यशास्त्र विभिन्न कलाओं का आदिग्रंथ माना जाता है इसलिए इसमें वर्णित कथा का ही संक्षिप्त अध्ययन जानकारी के लिए पर्याप्त होगा। देवताओं के आग्रह पर ब्रम्हाजी ने भरतमुनि को पंचम वेद की रचना करने की आज्ञ दी। भरतमुनि ने चारों वेदों से वांछनीय सामग्री लेकर पंचम वेद के रूप में नाट्यशास्त्र की रचना की, जिसमें ऋग्वेद से पाठय, यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से संगीत वं अर्थर्ववेद से रस को लिया गया। भरतमुनि ने अपने सौ पुत्रों

को प्रशिक्षित कर प्रायोगिक प्रस्तुति दी, जिसमें कैशिकी वृत्ति का भी समावेश किया गया एवं गीत, नृत्यादि कलाओं को भी नाट्य प्रदर्शन में स्थान मिला। देवासुर संग्राम, अमृतमंथन आदि नाटको की प्रस्तुति स्वर्गलोक में हुई। भरतपुत्रो को अपनी कला पर अभिमान होने के कारण श्रापित होकर पृथ्वी पर आना पड़ा। भरतपुत्रों ने कुछ समय पृथ्वी पर गृहस्थ जीवन व्यतीत किया एवं अपनी संतानों को इन कलाओं में प्रशिक्षित कर वापस स्वर्गलोक चले गये और इस तरह पृथ्वीलोक पर इन कलाओं का आगमन हुआ।

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में नाट्योत्पत्ति की कथा का विवरण दिया गया है जिसमें गीत नृत्य की संयोजना भी की गई थी। यहाँ पर इस कथा का संक्षिप्त विवरण इसलिए आवश्यक समझा गया क्योंकि नाट्यशास्त्र कलाओं का अत्यंत महत्वपूर्ण आदि ग्रंथ है। विशेष रूप से नृत्योत्पत्ति की कथाएं भी नृत्य जगत में प्रचलित है जिनमें नृत्य कला पर ही विशेष रूप से चर्चा की गई है सभी कथाओं का विवरण प्रस्तुत करना तो यहाँ संभव नहीं है फिर भी संक्षिप्त रूप से नृत्यकला के अत्यंत महत्वपूर्ण अंग ताण्डव एवं लास्य का विवरण दिया जा रहा है। ताण्डव एवं लास्य नृत्य भारतीय नृत्यों के अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। अत: ताण्डव एवं लास्य नृत्य से संबंधित नृत्यकला की उत्पत्ति की कथा पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है जिससे नृत्यकला के पृथ्वी पर अवतरण के प्रसंग की जानकारी भी शामिल है शिवजी को नृत्यकला का आदिदेव माना जाता है। यह सर्वविदित है कि शिवजी के द्वारा ही ताण्डव नृत्य की उत्पत्ति हुई। वीर, रौद्र, वीभत्स आदि रसों से युक्त ओजपूर्ण नृत्य जिसकी गति अत्यंत तीव्र होती है और जोरदार बोलो के प्रयोग आदि विशेषताओं से परिपूर्ण नृत्य को ताण्डव अंग के अंतर्गत रखा गया है प्रस्तुत नृत्य मुद्राओं को तण्डु मुनि द्वारा संकलित किया गया था। शिवजी की आज्ञा से तण्डु मुनि ने भरत मुनि को नृत्य की शिक्षा दी। तण्डु मुनि के द्वारा सिखाए जाने के कारण ही इस नृत्य को ताण्डव नृत्य कहा गया। भरतमुनि ने इस नृत्य की शिक्षा अपने पुत्रों को दी। जैसा कि पूर्व में नाट्योत्पत्ति की कथा में यह स्पष्ट हो चुका है कि श्रापवश भरत पुत्रों को पृथ्वी पर गृहस्थ जीवन व्यतीत करना पड़ा था इस तरह उनके द्वारा यह ताण्डव नृत्य भी पृथ्वी पर अवतरित हुआ। शिवजी के इस नृत्य से प्रेरित होकर माता पार्वती ने 'लास्य' नृत्य की रचना की। सुकोमल अंगहारों एवं सुंदर अंगसंचालन से युक्त मनोरम नृत्य को लास्य नृत्य कहा गया। वाणासुर की पुत्री उषा ने इस नृत्य की शिक्षा माता पार्वती से प्राप्त की। भगवान श्री कृष्ण के प्रपौत्र अनिरूद्ध से उषा का विवाह हुआ और उषा के साथ 'लास्य' नृत्य की भी पृथ्वी लोक में द्वारिका में आ गया उसका प्रशिक्षण उषा ने द्वारिका की स्त्रियों को दिया और धरती पर इस नृत्य कला का प्रचार प्रसार हो गया। ताण्डव एवं लास्य अंग भारतीय नृत्यों की संरचना में विद्यमान रहने वाले अतिमहत्वपूर्ण अंग है जिनकी जानकारी नृत्य के विद्यार्थियों को होना अत्यंत आवश्यक है इन नृत्यों की अपनी विशेषताएं एवं भेद भी है।

नृत्योत्पत्ति से संबंधित इन कथा प्रसंगों का विवरण देना यहाँ इसलिए आवश्यक था जिससे ये निश्चित रूप से कहा जा सके कि देवताओं के द्वारा ही भारतीय नृत्य कला की उत्पत्ति हुई। भारतीय संस्कृति में नृत्य को धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्ता प्रदान की गई है। हमारे देश में नृत्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं समझा जाता बल्कि इसे ईश्वर उपासना की वस्तु समझा जाता है। क्योंकि यह देवताओं से उत्पन्न कला है। 'द्वारिका महात्म्य' में कहा गया है कि–

यो नृत्यति प्रहृष्टात्मा भावैरत्यन्त भक्तितः।
स निर्दहति पापानि जन्मान्तर शतेरपि॥

अर्थात जो भी व्यक्ति अत्यंत भक्ति के साथ भावपूर्ण नृत्य करता है उसके पिछले सौ जन्मों के पाप भी नष्ट हो जाते हैं।

इस तरह भारतीय नृत्य कलाओं के इतिहास का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर ऐसा कहा जा सकता है कि अधिकांश भारतीय नृत्यों की पृष्ठभूमि अध्यात्मिक ही रही है। मुख्य रूप से भारतीय शास्त्रीय नृत्यकला का प्रस्तुतिकरण प्रारंभिक कालों में ईश्वरोपासना के उद्देश्य से ही किया जाता था। निश्चित रूप से समय के साथ नृत्य कला प्रस्तुति के उद्देश्यों में परिवर्तन होते रहे हैं क्योंकि भारत देश पर विभिन्न विदेशी शासकों का शासन रहा और हमारी कला एवं संस्कृति पर भी इसका पर्याप्त प्रभाव पड़ा किंतु आज भी नृत्यारंभ में ईश्वर की वंदना श्लोक या स्तुति की परंपरा लगभग सभी भारतीय नृत्यों में विद्यमान है। हमारे देश में अनगिनत देवी देवताओं की उपासना की जाती है। नृत्य प्रस्तुति में देवी देवताओं पर आधारित अनेंको कथानकों पर भावाभिनय भी होता है। क्षेत्र विशेष के आधार पर इष्ट देवों की स्तुति एवं गेय रचनाओं पर आधारित नृत्य प्रदर्शन भी किया जाता है। भारतीय नृत्यकला मुख्य रूप से दो भागों से मिलकर अपनी प्रस्तुति को संपूर्णता प्रदान करती है तालपक्ष एवं भावपक्ष। नृत्यकला में इन दोनों पक्षों का संतुलन ही नृत्य प्रदर्शन को सफलतम बनाता है। इन दोनों पक्षों का सूक्ष्मतापूर्वक अवलोक करने पर हमें दोनों ही पक्षों में देवी देवताओं से संबंधित रचनाएं मिलती है। भारतीय नृत्यों का भाव पक्ष मुख्य रूप से ईश्वरीय उपासना से संबंधित रचनाओं पर आधारित रहता है क्योंकि इसमें नृत्यारंभ में इष्टवंदना, स्तुति आवाहन आदि किया जाता है। नृत्य प्रस्तुति का अंत भी प्रायः भजन, ठुमरी आदि के प्रदर्शन से ही होता है जिसके नायक, नायिका, श्रीकृष्ण एवं राधा ही मुख्य रूप से होती है। अब यदि नृत्यकला के तालपक्ष में देवताओं से संबंधित रचनायें खोजने का प्रयास करें तो निश्चित रूप से यह एक कठिन कार्य होगा क्योंकि भावपक्ष प्रदर्शन में प्रयुक्त रचनाओं में सार्थक शब्दावली का प्रयोग होता है जिन्हें भावों एवं मुद्राओं के द्वारा आसानी से सामान्य दर्शक वर्ग भी समझ लेता है किंतु ताल पक्ष में जहाँ की शब्दावली सार्थक नहीं होती उसमें केवल नृत्य भंगिमाओं द्वरा ही हम देवदर्शन करेन में सक्षम हो पाते है जैसे कि कथक

7

संगीत जगत में काजी नजरूल इस्लाम का योगदान-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

रूमा चटर्जी

सारांश

बांग्लादेश के राष्ट्रीय कवि काजी नज़रुन इस्लाम बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। बांग्ला कवि, महान साहित्यकार, महान संगीतकार, देश प्रेमी, स्वतंत्र सेनानी एक निडर कवि जो अन्याय के विरुद्ध बोलने से नहीं डरते थे, इसलिए उन्हें विद्रोही कवि के रूप में जाना जाता हैं। काजी नज़रुल इस्लाम एक ऐसे संगीतज्ञ हैं, जो बांग्लादेश व भारत के पश्चिम बंगाल दोनों देशों में लोकप्रिय संगीतज्ञ हैं उनके गाने सभी को बहुत प्रिय हैं जो "नजरुल गीती" के रूप में जाने जाते हैं। संगीत के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियां असीम हैं। काजी नज़रुल के अधिकाश गीत सहज, सरल एवं स्वच्छंद है उनके गीतों में छंद के विचित्र मिलन व अलंकारों का अद्भुत संगम देखने को मिलता है उनके संगीत में माटी की खुशबू, वीरता का जोश, प्रभु के प्रति भक्ति तो है ही, साथ ही शास्त्रीय संगीत में भी उनकी विद्वता झलकती है।

काजी नज;रूल इस्लाम एक धर्मनिरपेक्ष कवि थे। इस्लाम धर्म संप्रदाय के होते हुए भी उन्होंने हिंदू भजनों की अद्भुत रचना की है–काली माँ और श्री कृष्ण उसमें प्रमुख हैं। उन्होंने बांग्ला भाषा में कई गज़लों की भी रचना की है। काजी नज़रुल इस्लाम बांग्लादेश के राष्ट्रीय कवि तो बाद में बने, उसके पहले भारत उनकी जन्मभूमि व कर्म भूमि है उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भी योगदान दिया, जिसको हम सब को नहीं भूलना चाहिए पि म बंगाल में रवींद्र नाथ टैगोर के बाद अगर किसी का सम्मान किया जाता है तो वह हैं काजी नज़रुल इस्लाम। उन्हें विश्व स्तरीय संगीतज्ञ के रूप में जाना जाता है विश्व में शायद ही कोई ऐसा कवि होगा जिसने मानवता के इतने करीब पहुँचकर गीतों की रचना की।

प्रस्तावना

"बोली वीर बोलो चिर उन्नत मेरा शीश मेरा मस्तक निहार झुका पड़ा है, हिमाद्री शिखर"